Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

लैंगिक भेदभाव एवं शैक्षणिक व सामाजिक मूल्यों के विकास का जीवन पर प्रभाव

डॉ. विभाकर उपमन्यु

सहायक प्राध्यापक, विरायतन बी.एड. कॉलेज पावापुरी,राजगीर, बिहार,भारत

Corresponding Author: * डॉ. विभाकर उपमन्यु

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22704161

सारांश

किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है | शिक्षा के द्वारा ही विचार आध्यात्मिक मूल्य, महत्वाकांक्षाओं का विकास और संस्कृति के संरक्षण का कार्य भी किया जाता है | शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आए हैं | शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन का घनिष्ठ संबंध है | ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना से लेकर *100* वर्षों तक अंग्रेजों ने देश में शिक्षा को प्रोत्साहित करने में कोई रुचि नहीं दिखाई थी | शिक्षक व विद्यार्थी भारतीय संस्कृति सदाचार एवं नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने की बजाय भौतिकता के आकर्षण के पीछे भागते दिखाई देते हैं | महान शैक्षिक विचारक जे. कृष्णमूर्ति एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला रखने को कृत संकल्प हुए, जो विद्यार्थी को वास्तविकता का बोध कराते हुए प्रेम करुणा प्रज्ञा संवेदनशीलता व अंतः ज्ञान आदि गुणों से युक्त बनाए बालकों का व्यक्तित्व निर्माण करना उनका उद्देश्य था | स्वामी विवेकानंद जी वर्तमान शिक्षा प्रणाली के कटु आलोचक और व्यवहारिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे |जिसकी आजकल की परिस्थितियों में अत्यंत आवश्यकता है | आज जबकि भारत या पूरा विश्व मूल्यों को खो देने के कगार पर है | मौजूदा समय की शिक्षा व्यवस्था केवल बेरोजगारों की भीड़ तैयार कर रही है, इसमें बेशक शाब्दिक ज्ञान बहुत हो लेकिन यह भी सच है कि ज्ञान अल्पकालिक होकर रह गया | देश की शिक्षा व्यवस्था यह गहरी नहीं होगी वह ज्ञान का प्रयास नहीं होगी, तो देश में सांस्कृतिक और मौलिक पास नहीं रोका जा सकता | हम दुनिया समझने निकले हैं, लेकिन देश की संस्कृति देश का अतीत देश का साहित्य हम नहीं समझ पाए, क्योंकि मैकाले की शिक्षा व्यवस्था की मंशा ही यही थी कि हम अपने आप अपनी संस्कृति और अपने देश के आदेश से दूर होते जाएँ | प्रौद्योगिकी यह जीवन और समाज के हर पहलू को छू रही है | आजादी के बाद से हमारे देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली व्यापक रूप में उभरी है | तकनीकी शिक्षा के मानक को बनाए रखने के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की स्थापना *1945* में हुई थी निगरानी और मूल्यांकन प्रमाणीकरण और पुरस्कारों की समानता बनाए रखना और देश में तकनीकी शिक्षा के समेकित और एकीकृत विकास और प्रबंधन को सुनिश्चित करना | आज का नागरिक अपना जीवन अपने अंदाज में व्यतीत करना चाहता है | विशेषकर अभिभावकों और शिक्षकों का मार्गदर्शन बच्चों के जीवन जीने की शैली को बहुत हद तक प्रभावित करता है | हमें उनकी भावनाओं को ठेस ना पहुंचे आते हुए परिवार समाज और राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों के प्रति भी जागरूक करना होगा | किसी भी देश को पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए वहां की महिलाओं का शिक्षित होना जरूरी है | महिला शिक्षा एक बड़ा मुद्दा है | भारत को आर्थिक रूप से तथा सामाजिक रूप से विकसित बनाने में शिक्षित महिला उस तरह का औजार है | जो भारतीय समाज पर और अपने परिवार पर अपने हुनर तथा ज्ञान से सकारात्मक प्रभाव डालती है |

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-08-2026
- **Accepted:** 04-09-2026
- **Published:** 11-09-2026
- **MRR:**4(9); 2026: 125-131
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

उपमन्यु वि. लैंगिक भेदभाव एवं शैक्षणिक व सामाजिक मूल्यों के विकास का जीवन पर प्रभाव. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(9):125-131.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: लिंग, भेदभाव, शैक्षिक, सामाजिक, मूल्य, शहरीकरण, वरीयता और दृष्टिकोण |

© 2026 डॉ. विभाकर उपमन्यु. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

अंग्रेजी काल के दौरान शिक्षा व्यवस्था :

प्राचीन भारत में भारतीयों ने सभ्यता के विविध क्षेत्रों में विकास के जो जीवन्त प्रतिमान स्थापित किए थे, उसका आधार उनकी शैक्षिक प्रगति थी। किन्तु मध्ययुग में इस्लाम धर्मानुयायियों के हाथों में भारत की राजनैतिक सत्ता के आ जाने से भारत की प्राचीन शैक्षिक और बौद्धिक प्रगति में विराम लग गए।आधुनिक युग में भारत में यूरोपीय जातियों के आगमन से आधुनिक शिक्षा का प्रचार हुआ। अंग्रेजों के भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने से आधुनिक शिक्षा और अंग्रेजी भाषा का प्रचार-प्रसार आरम्भ हुआ। 1698 ई. में ब्रिटेन की सरकार ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को अपनी छावनी में पादरी रखने और विद्यालय चलाने की आज्ञा प्रदान की। फलतः बम्बई, मद्रास और कलकत्ता में अनेक विद्यालय खोले गए। कम्पनी के हाथों में राजनैतिक सत्ता आने के बाद कम्पनी ने ईसाई मिशनरियों को सहायता देने के साथ अपनी शिक्षण संस्थाओं की भी स्थापना की। शिक्षा प्रसार में प्रमुख भूमिका निभाने वालों में बंगाल के सीरामपुर के तीन ईसाई मिशनरी- कैरे, वार्ड और मार्शमैन के नाम विशेष उल्लेखनीय है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भारतीयों ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जिनमें राजा राममोहन राय, राजा राधाकान्त देव और जननारायण घोषाल के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। राजा राममोहन राय के प्रयत्न के फलस्वरूप कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की गई जो कालान्तर में 'प्रेसीडेन्सी कॉलेज' के नाम से विख्यात हुआ। उस समय अँग्रेजों ने महसूस किया कि उनके निर्देशों को समझने, उन्हें क्रियान्वित करने तथा उनके शासन को सुचारू रूप से चलाए जाने के लिए अँग्रेजी पढ़े लिखे भारतीयों की आवश्यकता है। अतः ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा के विकास की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया |

1823 ई. में सर्वसाधारण की शिक्षा के लिए 'सर्वसाधारण शिक्षा की आम समिति' की नियुक्ति हुई। इसका उद्देश्य शिक्षा का माध्यम निश्चित करना था। इस समय भारतीय शिक्षा के संबंध में दो विचारधाराएँ थी

1. आंग्लवादी - लॉर्ड मैकाले इसके समर्थक थे ।

2. प्राच्यवादी - डॉ. विल्सन प्राच्यवादी का नेतृत्व कर रहे थे ।

1781 में वारेन हेस्टिंग्स ने मुस्लिम कानून तथा संबंधित अन्य विषयों की शिक्षा के लिए बंगाल में कोलकाता मदरसा की स्थापना की 1791 में हिंदू साहित्य दर्शन के अध्ययन हेतु बनारस के ब्रिटिश रेजिडेंट जोनाथन डंकन के अथक प्रयासों उपरांत बनारस में संस्कृत महाविद्यालय की नींव पड़ी | इसके उपरांत चार्टर एक्ट १८१३ ई., लार्ड मैकाले का स्मरण पत्र १८३५ ई., चार्ल्स वुड का वुड्स डिस्पैच १८५४ ई., डब्ल्यू हंटर का हंटर कमीशन १८८२ ई., लार्ड कर्जन का रैले कमीशन १८९९ ई., एम. सैडलर का सैडलर कमीशन १९१९ ई . , १९१९ ई. के अधिनियम में शिक्षा, १९३५ ई. के अधिनियम में शिक्षा, १९३७ ई. में बेसिक शिक्षा, १९४४ ई. में शिक्षा के लिए सार्जेंट योजना | अंग्रेजी काल में शिक्षा के सुधार में व्यापक परिवर्तन किए गए |

2. स्वामी विवेकानंद की शिक्षा की उपादेयता

विवेकानन्द शिक्षा के माध्यम से बालक में जीवन संघर्ष की तैयारी, चरित्र निर्माण, देश प्रेम, विश्व बन्धुत्व और आत्म अनुभूति के उद्देश्यों की पूर्ति चाहते थे । वास्तव में वर्तमान की वैश्विक परस्थितियाँ शिक्षा के इन्हीं उद्देश्यों की तरफ हमें ले जाने के लिए प्रेरित करती है । स्वामी विवेकानंद ने आम जनता के जीवन की परिस्थितियाँ सुधारने के लिए शिक्षा का समर्थन किया। उनके अनुसार आम जनता को प्राप्त होने वाली इस सार्वभौमिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत प्रगति के साथ सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना है । मन और शरीर दोनों को विकसित करने के लिए स्वस्थ रहना आवश्यक है । स्वामी विवेकानंद का विचार था कि बिना स्वस्थ शरीर के आत्म बोध या चरित्र निर्माण संभव नहीं है ।

"मनुष्य का वास्तविक और सर्वांगीण विकास तभी माना जाएगा जब वह मन और तन दोनों से न केवल स्वस्थ हो, बल्कि समाज में सकारात्मक योगदान भी करे । "

विवेकानन्द शिक्षण विधि में भी प्रायोगिक और कर के सीखने की बात करते हैं जिस पर वर्तमान में बहुत अनुसंधान और चिंतन हो रहा है और एनसीएफ 2005 ने बाल केन्द्रित विधियों का प्रस्ताव रखा है। साथ स्वामी विवेकानंद ने आम जनता के जीवन की परिस्थितियाँ सुधारने के लिए शिक्षा का समर्थन किया। उनके अनुसार आम जनता को प्राप्त होने वाली इस सार्वभौमिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तिगत प्रगति के साथ सामाजिक विकास को सुनिश्चित करना है।ही विवेकानन्द आध्यात्म और विज्ञान के समन्वयन की बात भी करते हैं और जीवन में आध्यात्म को केन्द्र में मानते हैं। इसी के माध्यम से देश और विश्व में शांति की स्थापना सम्भव है। विवेकानन्द छात्रों में प्रथम गुण शिक्षक के प्रति श्रद्धा को मानते हैं और इस तत्व की आवश्यकता शिक्षण प्रक्रिया को आधार मानते हैं ।

विवेकानन्द जी ने शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर बल दिया।

1. आत्म निर्भरता के लिए शिक्षा
2. शिक्षा एवं राष्ट्रीय एकता
3. सार्वभौमिक शिक्षा
4. एकाग्रता एवं शिक्षा
5. गुरु एवं शिष्य का आत्मीय सम्बन्ध
6. नारी शिक्षा पर विशेष बल
7. नवयुवकों के लिए रोजगारपरक शिक्षा
8. चरित्र निर्माण में शिक्षा का योगदान
9. शिक्षा द्वारा सभी समस्याओं का समाधान
10. शिक्षा में यथार्थवादी एवं समन्वयवादी दृष्टिकोण |

3. ज्ञानप्रदाता की भूमिका में शिक्षक

हर युग में शिक्षकों और शिक्षा में उनकी केन्द्रीय भूमिका को मान्यता मिली है। लेकिन समय के साथ शिक्षकों की सामाजिक स्थिति और उनकी भूमिका में जो परिवर्तन आया है उस पर भी सहज ही ध्यान चला जाता है । पहले शिक्षकों को एक निर्विवाद गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त था, जो यह जानते थे कि क्या पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है, लेकिन यह स्थिति बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी है । शिक्षकों और उनकी भूमिकाओं की बहुमुखी प्रणालीगत और सार्वजनिक छवि को उन रूपकों के लेंस के माध्यम से भी देखा जा सकता है जो शिक्षण और शिक्षकों के लिए इस्तेमाल किए गए हैं । इस प्रकार के वाक्यांश कि – १. माली के रूप में शिक्षक, २. मुक्तिदाता के रूप में शिक्षक, ३. माता-पिता के रूप में शिक्षक, ४. अनुप्रयुक्त वैज्ञानिक के रूप में शिक्षक, ५. चिकित्सक के रूप में शिक्षक, आदि दूरस्थ शिक्षण के द्योतक हैं और शिक्षक सार्वजनिक धारणा के मामले में आगे बढ़े हैं ।

© 2026 डॉ. विभाकर उपमन्यु. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जिनका हम अनुसरण करते हैं, वे बड़े व्यवस्थित और अनजाने तरीके से अपने और अन्य लोगों के सम्बन्ध में हमारी सोच, समझ-बूझ और आचरण का निर्माण करते हैं । आधुनिक समाज की बदली हुई वास्तविकताओं और उसके फलस्वरूप उत्पन्न सरोकारों के साथ ही शिक्षा से की जाने वाली अपेक्षाएँ भी बदल गई हैं|

शिक्षक को मनुष्यों का निर्माता राष्ट्र निर्माता शिक्षा पद्धति की आधारशिला तथा समाज को गति प्रदान करने वाला सब कुछ माना गया है साधारणतया शिक्षक में बालकों को समझने की शक्ति उनके साथ उचित रूप में कार्य करने की क्षमता शिक्षण योग्यता कार्य करने की इच्छा शक्ति और सहकारिता आदि गुणों की अपेक्षा की जाती है यह कार्य वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें कुछ विशिष्ट शारीरिक बौद्धिक सामाजिक नैतिक एवं संवेगात्मक गुण हूं शिक्षण एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें मस्तिष्क का मस्तिष्क से संबंध स्थापित किया जाता है|

नेतृत्व शैली एवं कार्य
सहभागी शैली
विक्रय शैली
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में शिक्षक
शिक्षक की जटिल भूमिका
ज्ञान प्रदाता के रूप में शिक्षक
सुविधा प्रदाता के रूप में शिक्षक|

4. स्वास्थ्य शिक्षा पद्धति

प्राचीन भारत में 400 ईसा पूर्व लगभग से पहले प्राथमिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी उस समय तक बालक का परिवार ही उसकी शिक्षा का केंद्र था उसके बाद कुछ ब्राह्मणों ने व्यक्तिगत रूप से शिक्षा देने का कार्य आरंभ किया इसके परिणाम स्वरूप जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ उसमें प्राथमिक और उच्च शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी प्राचीन भारत में शिक्षा के यही तो स्तर थे| वैचारिक तौर पर स्वस्थ शिक्षा पद्धति स्वस्थ समाज देश और विश्व का निर्माण कर सकती है|

प्राचीन भारतीय सभ्यताओं में वैदिक सभ्यता को सर्व प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है इस सभ्यता के निर्माता आर्य थे आर्यों के द्वारा अच्छी शिक्षा प्रणाली का विकास किया गया उसके संबंध में वेदों से पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है शिक्षा के क्षेत्र में आर्यों ने जन शैक्षिक उद्देश्यों और आदर्शों को निर्धारित किया है जिस शिक्षा प्रणाली की खोज की वह हजारों वर्षों के उपरांत भी आज के युग में अपने किसी ना किसी रूप में विद्यमान है , प्राचीन भारतीय शिक्षा की विशेषताएं|

शिक्षा व्यवस्था में सुधार आवश्यक है और यह जितना जल्द होगा सुधार का शंखनाद भी उतनी ही शीघ्र होगा देश की शिक्षा में संस्कृति गुरुकुल शिक्षा के साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रमुखता से समाहित हो| जिस शिक्षा व्यवस्था का वर्तमान समय में अध्ययन किया जा रहा है उस व्यवस्था में परिवर्तन समय की पहली मांग है संस्कृत से दूर और अंग्रेजी के करीब संस्कृत का ज्ञान का मूल केंद्र बनकर गर्वित महसूस करें शिक्षा रोज के अनुसार होनी चाहिए हमारी संस्कृत भाषा को लेकर गंभीर प्रायोगिक शिक्षा बेहद जरूरी पुरातन शिक्षा प्रणाली और भाषाओं के प्रति संजीदगी जरूरी| उपनयन संस्कार, विद्यारंभ संस्कार, समावर्तन संस्कार, गुरुकुल पद्धति, व्यवसायिक शिक्षा, कक्षा नाटकीय विधि, विद्यार्थियों के जीवन संबंधित नियमों में कठोरता, गुरु - शिष्य संबंध, व्यवहारिकता का समावेश, अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा, शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा का स्वरूप, ब्रम्हचर्य, पाठ्यक्रम, दंड व्यवस्था एवं नारी शिक्षा आदि ।

5. शिक्षा - समाज में परिर्वतन का आधार

शिक्षा समाज की प्रगति का आधार - शिक्षा समाज के लिये वह साधन है, जिसके द्वारा समाज के मनुष्यों के विचारों, आदर्शों, आदतों और दृष्टिकोण में परिवर्तन कर समाज की प्रगति की जाती है। एलवुड ने स्पष्ट किया है - "शिक्षा वह साधन है जिसमें समाज सब प्रकार की महत्वपूर्ण सामाजिक प्रगति की आशा कर सकता है| सामाजिक परिवर्तन अर्थात समाज के लोगों का विकास, लोगों के विचारों का परिवर्तन होता है। शिक्षा ही समाज के विकास का आधार बनती है। शिक्षा समाज के विकास को गति प्रदान करती है। शिक्षा द्वारा समाज के लोगों की सोच तथा व्यक्तित्व का विकास होता है । शिक्षा प्रणाली समाज की जरूरतों के अनुसार बदलती है । सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा का अर्थ है कि शिक्षा लोगों को सामाजिक परिवर्तन लाने में कैसे मदद करती है । शिक्षा सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण और पारंपरिक दृष्टिकोण को बदल देती है । यह बच्चों के कौशल और ज्ञान को तेज करता है ।

शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान, एवं कला - कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते है ।

1. शिक्षा का समाज पर प्रभाव

समाज शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है तो ठीक उसी प्रकार शिक्षा भी समाज को प्रत्येक पक्ष पर प्रभावित करती है, चाहे आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्वरूप हो। इस पर हम बिन्दुवार आगे कुछ विस्तार से देखेंगे-

2. शिक्षा व समाज का स्वरूप

शिक्षा का प्रारूप समाज के स्वरूप् को बदल देती है क्योंकि शिक्षा परिवर्तन का साधन है। समाज प्राचीनकाल से आत तक निरन्तर विकसित एवं परिवर्तित होता चला आ रहा है क्योंकि जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार-प्रसार होता गया इसने समाज में व्यक्तियों के प्रस्थिति, दृष्टिकोण , रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाजों पर असर डाला और इससे सम्पूर्ण समाज का स्वरूप बदला।

3. शिक्षा व सामाजिक सुधार एवं प्रगति

शिक्षा समाज के व्यक्तियों को इस योग्य बनाती है कि वह समाज में व्याप्त समस्याओं, कुरीतियों गलत परम्पराओं के प्रति सचेत होकर उसकी आलोचना करते है, और धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन हेाता जाता है। शिक्षा समाज के प्रति लेागों को जागरूक बनाते हुये उसमें प्रगति का आधार बनाती है। जैसे शिक्षा पूर्व में वर्ग विशेष का अधिकार थी जिससे कि समाज का रूप व स्तर अलग तरीके का या अत्यधिक धार्मिक कट्टरता, रूढिवादिता एवं भेदभाव या कालान्तर में शिक्षा समाज के सभी वर्गों के लिये अनिवार्य बनी जिससे कि स्वतंत्रता के

© 2026 डॉ. विभाकर उपमन्यु. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पश्चात् सामाजिक प्रगति एवं सुधार स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। डयूवी ने लिखा है कि- शिक्षा में अनिश्चितता और अल्पतम साधनों द्वारा सामाजिक और संस्थागत उद्देश्यों के साथ-साथ, समाज के कल्याण, प्रगति और सुधार में रूचि का दूषित होना पाया जाता है।

4. शिक्षा और सामाजिक नियंत्रण

शिक्षा समाज का स्वरूप बदलकर उस पर नियंत्रण भी करती है अभिप्राय यह है कि व्यक्ति का दृष्टिकोण एवं उसके क्रियाकलाप समाज को गतिशील रखते हैं। शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण में परिवर्तन कर उसके क्रियाकलापों में परिवर्तन कर समूह मन का निर्माण करती है और इससे अत्यव्यवस्था दूर कर उपयुक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करती है ।

5. शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

समाज की रचना मनुष्य ने की है, और समाज का आधार मानव क्रिया है ये- अन्त: क्रिया सदैव चलती रहेगी और शिक्षा की क्रिया के अन्तर्गत होती है इसीलिये शिक्षा व्यवस्था जहां समाज से प्रभावित हेाती है वहीं समाज को परिवर्तित भी करती है जैसे कि स्वतंत्रता के पश्चात् सबके लिये शिक्षा एवं समानता के लिये शिक्षा हमारे मुख्य लक्ष्य रहे हैं इससे शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ और समाज का पुराना ढांचा परिवर्तन होने लगा। आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्य अधिक लोकप्रिय हुआ। सादा जीवन उच्च विचार से अब हर वर्ग अपनी इच्छाओं के अनुरूप जीना चाहता है। शिक्षा ने जातिगत व लैंगिक असमानता को काफी हद तक दूर करने काप्रयास किया। और ग्रामीण समाज अब शहरी समाजों में बदलने लगे और सामूहिक परिवारों का चलन कम हो रहा है। शिक्षा के द्वारा सामाजिक परिवर्तन और इसके द्वारा शिक्षा पर प्रभाव दोनों ही तथ्य अपने स्थान पर स्पष्ट है ।

सैयदेन ने इस बात को और स्पष्ट करते हुये लिखा है कि- इस समय भारत में शिक्षा बहुत नाजुक पर रोचक अवस्था में से होकर गुजर रही है, यह स्वाभाविक है क्योंकि समग्र रूप में राष्ट्रीय जीवन भी जिसका शिक्षा भी अनिवार्य अंग है, ऐसी ही अवस्था में से होकर गुजर रहा है |

6. शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान :

मनोविज्ञान, जीवनगत प्रत्येक प्रकार की सभी परिस्थितियों के प्रति प्राणी-प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है।'' चार्ल्स ई. स्किनर

मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है हर मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान की आवश्यकता होती है। मनोविज्ञान विधायक विज्ञान है। इसका ज्ञान समस्त प्राणियों को होना चाहिए। जीवन के हर क्षेत्र को सामाजिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक मनोविज्ञान प्रभावित करता है । शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के संयोग से बना है शिक्षा और मनोविज्ञान । अतः शिक्षा मनोविज्ञान शब्द का शाब्दिक अर्थ निःसंदेह शिक्षा से सम्बन्धित मनोविज्ञान से है। शिक्षा का सम्बन्ध मानव व्यवहार के परिमार्जन से होता है, जबकि मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार के अध्ययन से होता है । मानसिक विकास में सहायक - शिक्षक प्रेरकों का प्रयोग करके छात्रों में ज्ञान प्राप्ति के लिये अभिलाषा उत्पन्न करके उनके मानसिक विकास में सहायता कर सकता है। लक्ष्य प्राप्ति में सहायक - प्रत्येक व्यक्ति का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है। अभिप्रेरणा निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए सदैव प्रेरित करती रहती है । प्राणी की क्रिया एवं व्यवहार के पीछे कोई न कोई प्रेरणा होती है। उसी से प्रेरित होकर वह कार्य करता है। इसी प्रेरक शक्ति को अभिप्रेरणा कहा जाता है |

शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध विशेष रूप से बालक की सीखने व उसकी शिक्षा की प्रक्रिया को सफल बनाने से हैं, इस दृष्टि से शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत उन सभी बातों व विषय सामग्री का अध्ययन किया जाता है, जो बालकों के सीखने या ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में सहायक हो ।शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य उत्तम शिक्षण तथा अधिगम हेतु मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करना है ।

- व्यक्तिगत विभिन्नता का अध्ययन |
- अपराधी बालकों का अध्ययन |
- सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन |
- बालक की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन |
- वंशानुक्रमण एवं वातावरण का अध्ययन |
- अध्ययन विधियों का अध्ययन |
- मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन |
- प्रेरणाओं एवं मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन |

7. महिलाओं में बढती शिक्षा रूचि :

जनसंख्या के मामले में हमारा देश पूरे विश्व में दूसरे नंबर पर आता है | अगर महिला खुद शिक्षित होगी तो देश का आने वाला भविष्य शिक्षित होगा | महिलाओं को भी पुरुषों कितना शिक्षा संबंधित गतिविधियों में बराबरी का मौका दिया जाना चाहिए | उन्हें शिक्षा से जुड़ी किसी भी तरह की कार्यवाही से दूर रखना क्रूरता के समान है | अगर महिलाएं अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाए तो इसका मतलब है कि हमारे देश का विकास भी अधूरा है | भारत में महिला साक्षरता नए जमाने कि हम जरूरत है महिलाओं के शिक्षित हुए बिना हम देश के उज्जवल भविष्य की कल्पना भी नहीं कर सकते | परिवार समाज और देश की उन्नत में महिलाओं की भूमिका एक महत्वपूर्ण है | शिक्षा महिलाओं को पुरुषों की भांति समाज और देश को प्रगति के पथ पर ले जाने के कर्तव्य से भी अवगत कराती है | आजादी के बाद के समय तक महिला साक्षरता को लेकर किए गए प्रयासों में बहुत प्रगट हुई है |वर्तमान में अभी यह कार्य सन्तुष्टि के स्तर तक नहीं पहुंचा है, अभी इस समय काफी काम करना बाकी है | भारत में महिला साक्षरता को लेकर गंभीर था इसलिए कम है, क्योंकि बहुत पहले समाज में महिलाओं पर तरह-तरह की पाबंदियां थी | आर्थिक संकट के इस युग में लड़कियों के लिए शिक्षा एक वरदान है | आज के इस युग में एक मध्यम वर्गीय परिवार की जरूरतों को पूरा करना वास्तव में कठिन है | शादी के बाद अगर एक शिक्षण लड़की काम करती है, तो वह अपने पति के साथ परिवार के खर्चों को पूरा करने में मदद कर सकती हैं | शिक्षा महिलाओं की सोच के दायरे को बढ़ाती है जिससे वह अपने बच्चों की परवरिश अच्छे से कर सकती है | एक शिक्षित लड़की विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के काम और बोझ को साझा कर सकती है | किसी भी क्षेत्र वह कार्य करके देश की सेवा कर सकती है | शिक्षा एक लड़की को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में मदद करती है | ताकि वह अपने अधिकारों और महिलाओं के सशक्तिकरण को पहचान सके जिससे उसे लिंग समानता की समस्या से लड़ने में मदद मिले |

© 2026 डॉ. विभाकर उपमन्यु. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

8. शिक्षा में तकनीकि का प्रभाव

प्रौद्योगिकी जीवन और समाज के हर पहलू को छू रही है | आजादी के बाद से हमारे देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली काफी बड़े आकार की प्रणाली में उभरी है | तकनीकी शिक्षा के मानक को बनाए रखने के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की स्थापना 1945 में हुई थी | मानदंडों और मानकों की योजना निर्माण और रखरखाव मान्यता के माध्यम से गुणवत्ता आश्वासन प्राथमिक क्षेत्रों में वित्त पोषण के लिए जिम्मेदार है | तकनीकी शिक्षा समग्र शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा हिस्सा योगदान देती है और हमारे देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | तकनीकी शिक्षा द्वारा सामान्य शिक्षा को प्रतिस्थापित किया गया है | तकनीकी शिक्षा रोजगार और सफल कैरियर के लिए अच्छा अवसर प्रदान करता है | तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत में दो संरचनात्मक धाराएं औपचारिक और अनौपचारिक, भारत में नए औद्योगिक और श्रमिक रुझानों ने स्पष्ट रूप से तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता को निर्देशित किया है | सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एक व्यापक क्षेत्र है | जिसमें सूचना के संचार के लिए हर तरह की प्रौद्योगिकी समाज हित है यह हवा पौधों की है जो कि सूचना के संचालन की योग्यता रखता है | आईसीटी एक प्लंबिंग प्रणाली की तरह है, जहां सूचना सूचना प्रौद्योगिकी में संचालित होती है तथा संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से संचार प्राप्त के पास पहुंचता है | शिक्षण में कंप्यूटर तक आधारित शिक्षा तकनीकों का उपयोग भारत की प्रसिद्ध शिक्षा प्रणाली और संस्थानों द्वारा बनाया गया है | शब्दों और प्रतीकों की विविधता कंप्यूटर की महान शक्ति है जो सच में प्रयास का केंद्र है | ई लर्निंग और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षण अधिक रोचक और आसान हो रहा है | इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों तक पहुंच सकते हैं और उनको घर बैठे पढ़ा सकते हैं | इंटरनेट ज्ञान का एक संग्रह है, सूचना व संचार के लिए इस्तेमाल किया जाता है जो इलेक्ट्रिकल माध्यम से सूचना के प्रेषण संग्रहण निर्माण प्रदर्शन या आदान-प्रदान में काम आते हैं | सूचना आयोग के शैक्षिक उद्देश्यों को साकार करने के लिए शिक्षा में सूचना आयोग संचार प्रौद्योगिकी के अनेक रूपों को शामिल करने की आवश्यकता है |

9. अध्यापक की कुशलता का प्रभाव

अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। अध्यापक के बिना शिक्षा की प्रक्रिया सफल रुप से नहीं चल सकती । अध्यापक न केवल छात्रों को शिक्षा प्रदान करके ही अपने दायित्वत से मुक्ति पा लेता है वरन उसका उत्तर दायित्व है, तो इतना अधिक और महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें पूर्ण करने में समर्थ नहीं है । शिक्षक की क्रिया और व्यवहार का प्रभाव उसके विद्यार्थियों,विद्यालय और समाज पर पड़ता है । इस दृष्टि से कहा जाता है कि अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है |

एक अच्छा और प्रभावशाली अध्यापक वह है जो विद्यार्थियों , प्रधानाध्यापक तथा अन्य के सामने इसी गलत बात के लिए नहीं झुकता है। किसी प्रकार का अन्याय सह नहीं करता है , गलत बात का समझोता नहीं करता है। जो अध्यापक अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति सचेत रहता है वही अपने आत्मसम्मान की रक्षा कर पाता है । एक अच्छे अध्यापक में निम्नलिखित गुणों का होना अति आवश्यक है – शिक्षक में मुख्य रुप से 4 गुण होने जरुरी हैं |

- शैक्षिक गुण/ योग्यताएं
- व्यावसायिक गुण
- व्यक्तित्व संबंधी गुण और
- संबंध स्थापित करने का गुण

1. शैक्षिक योग्यता

एक अध्यापक में अध्ययन के लिए स्तरअनुसार न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का होना अनिवार्य है। साथ ही अध्यापक का प्रशिक्षित होना भी आवश्यक है |

2. व्यावसायिक गुण

व्यवसाय के प्रति रुचि एवं निष्ठा, विषय का पूर्ण ज्ञान,शिक्षण विधियों का प्रयोग,सहायक सामग्री का प्रयोग

मनोविज्ञान का ज्ञान, ज्ञान पिपासा, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में रूचि, समय का पाबंद, कुशल वक्ता और छात्रों के प्रति प्रेम व सहानुभूति आदि गुण होना आवश्यक है |

3 व्यक्तित्व संबंधी गुण

वेशभूषा, अच्छा स्वास्थ्य, उच्च गुणवत्ता, नेतृत्व शक्ति, धैर्यवान, विनोदप्रिय, उत्साह और आत्म-सम्मान आदि व्यक्तित्व संबंधित गुण होने चाहिए |

4. संबंध स्थापित करने का गुण :

एक अच्छा अध्यापक वह है जो विद्यार्थियों के साथ संबंध, साथी अध्यापकों के साथ संबंध, प्रधानाध्यापक के साथ संबंध, अभिभावको के साथ संबंध और समाज के साथ संबंध के साथ अच्छा संबंध रखता है | जिस शिक्षक में उपयुक्त सभी गुण होंगे तो कहा जा सकता है कि वह अध्यापक कुशल और प्रभावशाली है |

10. ग्रामीण बालिकाओं के जीवन में लिंग भेदभाव का प्रभाव

भेदभाव शब्द का अर्थ अलग तरह से व्यवहार करना और लिंग भेदभाव का अर्थ है लिंग के आधार पर व्यक्तियों को अपेक्षाकृत अलग उपचार हमारे समाज में महिलाएं हिना व्यवहार से मिल मिलते हैं और यह भेदभाव स्वास्थ्य देखभाल सहित ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रचलित है |

भारत में लैंगिक भेदभाव का व्यापकता भारतीय सभ्यता में माना जाता है कि बच्चे को केवल परिवार के भीतर ही नहीं बल्कि समाज के भीतर भी प्यार देखभाल और स्नेह से पोषित किया जाना चाहिए पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अनुसार बेटियों पर बेटों की प्राथमिकता या बेटों का विशेषाधिकार भारत में बढ़ती हुई घटना है संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों के युग में जहां एक उद्देश्य लैंगिक समानता को बढ़ाना और महिलाओं को सशक्त बनाना है बेटे की प्राथमिकता के मुद्दे पर और भी व्यापक रूप से बहस की जाती है ग्रामीण और शहरी दोनों परिवारों में यह प्रक्रिया 1 पुत्र वरीयता के कारण उत्पन्न होती है जिसमें बेटों को आशीर्वाद प्रदान परिवार के वंश के वाहक के रूप में सराहना की जाती है परिवार को आए और परिवार को बीमा वृद्धावस्था के दौरान माता-पिता की देखभाल करने वाले और एक व्यक्ति जो कर सकते हैं मृत्यु के बाद उन्हें मुखाग्नि दे अर्थात पुत्र माता पिता के मरने पर अंतिम संस्कार की चिता को रोशन करते हैं | लैंगिक भेदभाव में

© 2026 डॉ. विभाकर उपमन्यु. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

एक बेटे के बिना एक परिवार अधूरा है और एक सामाजिक शर्मिंदगी है इसके विपरीत महिलाओं को अभिशाप बोझ और बेटी की परवरिश के लिए समय और धन की बर्बादी, परिवार के लिए खर्च और परिवार के वंश के विकास के संदर्भ में बेकार है क्योंकि उसे कहीं और शादी करनी है जो भी नाम कमाती है वह व्यर्थ हो जाता है ऐसी रूढ़िवादिता लैंगिक भेदभाव के कारण हैं |

लिंग असमानता के कारण

लिंगीय असमानता भौतिक दृष्टि के साथ - साथ मानसिक सोच से भी परिलक्षित होती है । प्राचीन साहित्य से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के लिए धर्म का पालन करना सबसे बड़ा पुरूषार्थ है और धर्मपालन के लिए पुत्र की प्राप्ति आवश्यक है। जब प्राचीन समय में स्त्री - और पुरूष में भेद नहीं था दोनों के अधिकार समान समय थे तो धर्म साहित्य में पुत्र प्राप्ति को अनिवार्य क्यों किया ? क्या पुत्री धर्म का पालन नहीं कर सकती ? क्या पुत्री पिण्डदान नहीं कर सकती ? क्या पुत्री आर्थिक उपार्ज न करके अपने परिवार का पालन - पोषण नहीं कर सकती ? पुत्र प्राप्ति की मानसिकता ने ही स्त्री भेदभाव को बढावा दिया है। ऐसा नहीं है , तो आज ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहां स्त्री आगे नहीं बढ रही हो और उसके साथ केवल लिंग के आधार पर भेदभाव न होता हो लिंग असमानता के निम्न कारण है -

1. धार्मिक कारण
2. सामाजिक कारण
3. आर्थिक कारण
4. राजनैतिक कारण
5. अन्य कारण –

असमानता को समाप्त करने के प्रयास

भारत ने मैक्सिको कार्ययोजना (1975), नैरोबी अग्रदर्शी (Provident) रणनीतियाँ (1985) और लैंगिक समानता तथा विकास एवं शांति पर संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र द्वारा 21वीं शताब्दी के लिये अंगीकृत "बीजिंग डिक्लरेशन एंड प्लेटफार्म फॉर एक्शन को कार्यान्वित करने के लिये और कार्रवाइयाँ एवं पहलें" जैसी लैंगिक समानता की वैश्विक पहलों की अभिपुष्टि की है।

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं', 'वन स्टॉप सेंटर योजना', 'महिला हेल्पलाइन योजना' और 'महिला शक्ति केंद्र' जैसी योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तीकरण का प्रयास किया जा रहा है। इन योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप लिंगानुपात और लड़कियों के शैक्षिक नामांकन में प्रगति देखी जा रही है ।

सामाजिक आर्थिक प्रभाव

बेहतर कनेक्टिविटी करीबी को कम करने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक होगी |

1. किसानों को ग्रामीण बाजारों तक पहुंच बढ़ाने से लाभ होगा और कृषि उत्पादकता में वृद्धि होगी |
2. ग्रामीण समुदाय निर्वाह खेती से अधिक व्यवसायिक रूप से उन्मुख कृषि में स्थानांतरित करने में उत्पादन सक्षम होंगे |
3. उच्च मूल्य के नाशवान उत्पादों के उत्पादन की मुख्यधारा का निर्माण संभव हो जाएगा |
4. गरीब परिवार अपने गांव के बाहर बेहतर रोजगार प्राप्त करने में सक्षम होंगे |
5. गैर कृषि उद्यमी में निवेश तेज गति से बढेगा |
6. निवेश कार्यक्रम खुद ग्रामीण महिलाओं सहित ग्रामीण गरीबों के लिए श्रम अवसर पैदा करेगा |

लिंग विशिष्ट प्रभाव

बेहतर प्लेटफार्म के परिणाम स्वरूप कई होंगे राज्यों में ग्रामीण महिलाओं और लड़कियों के लिए सामाजिक आर्थिक लाभ यह विशेष रूप से सुरक्षित संस्थागत प्रसव को बढ़ाएगा मात्री और जन्म पूर्व मृत्यु और बच्चों की मृत्यु दर को कम करेगा स्कूलों और विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन में वृद्धि करेगा यह महिलाओं और लड़कियों के लिए आर्थिक अवसरों और सुरक्षित गतिशीलता को बढ़ाएगा ||[१८]

11. अध्ययन का उद्देश्य

1. शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन का अध्ययन |
2. शैक्षणिक मूल्यों के विकास का जीवन पर प्रभाव का अध्ययन |
3. महिलाओं में शिक्षा के प्रति रुझान का अध्ययन |
4. लिंग भेदभाव का ग्रामीण बालिकाओं के विकास पर प्रभाव का अध्ययन |
5. ग्रामीण बालिकाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन |

12. निष्कर्ष

शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है | शिक्षा मानव के मूल प्रकृति जन्म व्यवहार को परिमार्जित करके उसमें धैर्य, सहनशीलता, त्याग, परोपकार एवं अन्य अनेक नैतिक गुणों का विकास करती है | शिक्षा ही है, जो समाज के सभी वर्गों के लिए उत्पादक उपयोगी तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाकर देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है | वैचारिक तौर पर स्वास्थ्य शिक्षा पद्धति स्वस्थ समाज देश और विश्व का निर्माण कर सकती है | हमारी पुरातन शिक्षा व्यवस्था आदर्श रही है और हमारी भाषा संस्कृत विश्व पटल पर मजबूती से दस्तक दे चुकी है | शिक्षा बालिकाओं एवं महिलाओं की सोच के दायरे को बढ़ाती है | जिससे वह अपने बच्चों की परवरिश अच्छे से कर सकती है | शिक्षा एक बालिका एवं महिला को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने में मदद करती है, ताकि वह अपने अधिकारों और महिलाओं के सशक्तिकरण को पहचान सके जिससे उसे लिंग - असमानता की समस्या से लड़ने में मदद मिले | आर्थिक संकट के इस युग में लड़कियों के लिए शिक्षा एक वरदान है | शिक्षा के कारण सामाजिक मूल्यों में सकारात्मक परिवर्तन आए हैं | शैक्षिक विधियों का उत्तरदायित्व छात्रों के वर्तमान परिवेश व्यवहार को प्रस्तुत समस्या से समायोजित करने मात्र से ही नहीं है, बल्कि छात्रों में एक ऐसे नवीन प्रविष्ट व्यवहार को जन्म देना है, जो बालक को शैक्षिक उद्देश्यों की उपलब्धि के लिए सक्षम और अयोग्य बना सके | शिक्षक को सरलीकरण दृष्टिकोण रखना चाहिए | सूचना युग के शैक्षिक उद्देश्यों को साकार करने के लिए शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के आदमी लोगों को शामिल करने की आवश्यकता है | सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उन कार्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता है | जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचना के प्रेषण संग्रहण निर्माण प्रदर्शन या आदान-प्रदान में काम आते हैं |

© 2026 डॉ. विभाकर उपमन्यु. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ सूची

1. मुखर्जी एसएन. भारत में अंग्रेजी काल के दौरान शिक्षा व्यवस्था.
2. नुरुल्लाह एस, नाइक जेपी. ब्रिटिश काल के दौरान शिक्षा का इतिहास.
3. बानू जेहरा. विद्या भवन जीएस टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, उदयपुर, राजस्थान.
4. पाण्डेय राम शकल. विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री.
5. कुमार राजेश. अजीम प्रेमजी फाउंडेशन.
6. शर्मा राजीव. सहायक प्रोफेसर, आरकेएसडी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कैथल, हरियाणा.
7. मालवीय डीएस, खरे उषा. भारत में शैक्षिक व्यवस्था का विकास.
8. कमला. शिक्षाशास्त्र.
9. चौबे एसपी. शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार. मेरठ: इंटरनेशनल बुक्स.
10. पाण्डेय निर्मल चन्द, यादव आशीष. स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश.
11. पाठक पीडी. शिक्षा मनोविज्ञान.
12. यादव विजय. स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश.
13. पाल सुभादर. प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, हरियाणा.
14. शम्भुइन्ग फंदीलोलू जयश्री. शोध छात्र, ओपीजेएस विश्वविद्यालय, चूरू, राजस्थान.
15. पाल सुभादर. प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, हरियाणा.
16. नाइक श्रीनिवास. शिक्षा विभाग, जीपीयू कॉलेज, वोग्गा, बंतवाल, कर्नाटक.
17. शिव कुमार एम. भारत में लिंग भेदभाव एवं महिला विकास.
18. तिवारी सुरुचि. मानवविज्ञानी: शहरी मलिन बस्तियों में बच्चों के बीच लैंगिक भेदभाव.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author

डॉ. विभाकर उपमन्यु विरायतन बी.एड. कॉलेज, पावापुरी, राजगीर, बिहार में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। वे शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन एवं शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़े हैं। उनका शैक्षणिक अनुभव भावी शिक्षकों के प्रशिक्षण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया तथा शिक्षा के विभिन्न आयामों के अध्ययन में योगदान देता है।

© 2026 डॉ. विभाकर उपमन्यु. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/